सत्य और अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लेमेन्स इवैंजलिकल फैलोशिप इंटरनेशनल, | जनवरी-फरवरी, 2018

विश्राम के लिए यीशु के पास आना

आजकल लोगों का जीवन इतना उलझ गया है कि वे आसान उपाय को तुच्छ समझते है। आदमी की समस्याएं, उनके दिलों को कुतरकर खाते जाते है जब तक वो या तो अचानक बीमार हो जाते हैं या फिर मौत का शिकार हो जाते है। बहुत पढ़े-लिखे आदमियों ने भी अपनी भावनओं और वासनाओं पर काबू पाना नहीं सीखा है। उनमें उनकी समझ भ्रष्ट करके वे अपने परिवारों को भी तबाह कर रहें है। क्या परमेश्वर के पास हमारी समस्याओं का हल है? या फिर वे सिर्फ एक भावुक प्रतीक हैं। एक तस्वीर है जो दिवार पर लटकाए जाने के लिए है। जीवित परमेश्वर ने हम से साफ-साफ कहा है: (मेरे पास आओ: मैं तुम्हें विश्राम दूँगा।) यह आप के लिए और मेरे लिए एक वरदान है। या तो यह वरदान सच है, या फिर बोला गया एक सब से बड़ा झूठ है।

विश्राम के लिए.. पृष्ठ 3 पर

आत्मिक उन्नति के लिए देखना न भूलें।

परमेश्वर की चुनौती

TV - Star Utsav

चैनल पर

हर **रविवार सुबह 7:30 से 8:00** बजे

जीवित बलिदान

"अतः हे भाईयों, मैं परमेश्वर की दया का स्मरण दिलाकर तुमसे आग्रह करता हूँ कि तुम अपने शरीरों को जीवित, पवित्र और ग्रहणयोग्य बलिदान करके परमेश्वर को समर्पित कर दो। यही तुम्हारी आत्मिक आराधना है।" (रोमियों 12:1)

हमसे कहा जा रहा है कि अपने शरीरों को जीवित बलिदान करके समर्पित करना है, जो परमेश्वर के सामने पवित्र और ग्रहणयोग्य हो। यह परमेश्वर के लिए तर्कसंगत सेवा होगी। यह प्रायः बहुत ऊंचा स्तर जान पड़ता है। एक जीवित बलिदान अपने आप में बहुत ऊंचा स्तर नज़र आता हैं, और उस पर यह पवित्र हो, और ग्रहणयोग्य बलिदान हो! जब एक व्यक्ति इस स्तर पर आता है, तब वह एक आलौकिक व्यक्ति होगा। मसीहत से कोई आलौकिक तत्व छीन नहीं सकता है। मसीही जीवन मानव के दिमागी सोच या क्षमता पर निर्भर नहीं करता, परन्तु आत्मा के सोच और काम पर निर्भर करता है। जब परमेश्वर व्यक्ति के आत्मा पर काम करता है, उसकी आत्मा पुनर्जीवित होती है। परमेश्वर ने क्रूस तैयार किया - एक खंभे पर एक सांप को लटकाया, कि मनुष्य को आलौकिक स्तर पर उठाए। यह चंगा करने की सामर्थ उस लटकती हुई चीज से लोगों के शरीर में प्रवाहित हो रही थी (इस्राएली लोग जो जंगल में सांप के काटने से मर रहे थे।) कुछ आलौकिक चीज उनमें घटित हुई। उस सामर्थ ने उनकी नसों में बहते हुए विष को मार डाला, और उनकी जान बची। लोगों के बीच में रहते हुए पवित्र व्यक्तित्व बनाए रखना असंभव है। लेकिन मसीह पवित्र थे। उन्होंने आदमी की बुरी, जहरीली और बदले की भावना के स्वभाव को अपने ऊपर लिया और क्रूस पर मर गए। जब मसीह हमारे लिए पाप बन गए, सांप उनका सही प्रतीक था। मसीह हमारे लिए पाप बन गए! जब हम विश्वास से उनको देखते हैं, उनसे अनुग्रह हममें प्रवाहित होता है जो हमें पवित्र बनाता है। हमारे अंदर का पाप क्रूस पर चला जाता है, और उनका सदाचार या अच्छे गुण हम में बहने लगते हैं। परमेश्वर का स्वभाव क्रूस के जरिए मानव शरीर में प्रवाहित होता है। मसीही धर्म का अपना आलौकिक पहलू है। यह परमेश्वर का दिया धर्म है। परमेश्वर मनुष्य में एक उच्चतर बुद्धि और शक्ति डालता है, जिसे संसार नहीं जानता है। वे जिन्हें क्रूस की आत्मिक झलक मिलती है, वे ही परमेश्वर के प्रेम को समझ पाते हैं। वे भी उसकी पवित्रिकरण की शक्ति के भाग को पाते हैं। हम केवल क्रूस के द्वारा परमेश्वर के पास जा सकते हैं। हम सीधे नहीं जा सकते। उच्च स्तर की सेवा संत पौलूस के रोमियों के

अध्याय 12:1 में वर्णन की गई है। ऐसे जीवन की अपेक्षा की जाती है क्योंकि परमेश्वर ने उसे संभव बनाया है। इस लिए संत पौलूस ने "जीवित बलिदान" का प्रचार किया। "क्रूस आपको मरने की शक्ति देता है - ख्रीष्ट की मृत्यु का अनुभव आप कर सकते हैं।

लाजर के मामले में, वह मरा और फिर जीवित हो गया। उसके लिए संसार में अब किसी चीज़ का मूल्य नहीं होगा क्योंकि वो मृत्यु से होकर गुजरा और कब्र में रखा गया। वह पूरी रीति से संसार के लगाव से अलग हो गया था। संसार की सम्पति से लगाव हटने से हमारा आत्मिक जीवन एक अलग ही स्तर में चला जाता है। स्वार्थ की मौत, हमारे आत्मिक जीवन को अलग ही स्तर पर ले जाता है। ये बड़े चमत्कार हैं। हमारी मंडलियाँ स्वार्थ - केन्द्रित लोगों के कारण बर्बाद हो रही हैं। उनके अहम् से ही सारे काम चलाए और नियंत्रित किए जाते हैं। क्रूस हमें संसार से अलग होने में मदद करता है। जब ख्रीष्ट मरा, तब परमेश्वर की आलौकिक शक्ति ने काम किया और यीशु को जीवित किया। इफिसियों (1:19,20) "और उसका सामर्थ्य हम विश्वास करने वालों के प्रति कितना महान है। ये सब उसकी उस शक्ति के कार्य के अनुसार है। जिसे उसने मसीह में पूरा किया जब उसने उसे मरे हुओं से जिला कर अपनी दाहिनी ओर स्वर्गीय स्थानों में बैठाया।" परमेश्वर की महान सामर्थ्य सृष्टि के समय प्रगट नहीं हुई, बल्कि उस समय जब यीशु को मरे हुओं में से जिलाया। जब आप क्रूस पर ध्यान देते हैं, वही महान सामर्थ्य आप में मौत लाती है। आदमी की "मैं" को मारने के लिए आलौकिक ताकत की जरूरत है। यदि आप आत्मिक क्षेत्र की ऊँचाईयों में जाना चाहते हैं, तो आपको क्रूस द्वारा अपनी "मैं" की मौत का अनुभव करके ही जाना पड़ेगा। इसहाक, जब वह वेदी पर रखा गया तो मानो मरे समान था। क्या इसके बाद किसी भी आज्ञा के सामने झुकने में उसे कुछ कठिनाई होगी?

परमेश्वर ने कहा, 'इसहाक, मिस्र को मत जाओ।' उसने कहा, 'बहुत अच्छा! प्रभु, मैं नहीं जाऊंगा।' परमेश्वर ने कहा, 'इसहाक, उन लोगों से झगड़ा मत करो, जिन्होंने अन्याय से तुम्हारे कुओं को अपने अधिकार में ले लिया है। यह तुम्हारा परिश्रम था, पर चिन्ता मत करो।' इसहाक ने अपने कुओं को इसी तरह दूसरों के हाथ में जाने दिया। उसे ये करना मुश्किल नहीं जान पड़ा। जब आप इस स्तर पर आते हैं कि किसी चीज़ के लिए कोई खास लगाव नहीं हो। अगर आप पूछे कि ये कैसे संभव है? यह परमेश्वर की महान शक्ति से संभव है जो आपको ऊपर उठाती है। यदि आप एक हवाई अड्डे को जायें और एक हवाई जहाज़ देखकर पायलट से पूछें। 'आपने कैसे इस भारी वाहन को धरती से ऊपर एक निश्चित दिशा में उड़ाया?' उसने क्या कहा होगा? 'यह मैंने अपनी ताकत से नहीं किया है। वो लोग, जिन्होंने इस जहाज को बनाया है उन्होंने ऐसा बनाया कि इसका निश्चित दिशा में उपर उड़ना संभव हो वैसे ही इसे तैयार किया। परमेश्वर ने क्रूस पर हमारे लिए अपने पुत्र का बलिदान किया, उन्होंने हमारे लिए एक मार्ग बनाया कि हम उच्चतर स्तर पर उठ सकें जहां जीवित बलिदान संभव हो सका। उस सतह पर जीवन बहुत सुखद है। जहां आप को मृत्यु का भय नहीं है। अब भय कहाँ है? परमेश्वर जिन्होंने आपको बुलाया है वह विश्वासयोग्य है, और उन्होंने अपने एकलौते पुत्र का बलिदान किया, जिस से इस दैविक सामर्थ्य से एक दुष्ट मानव का पवित्र मानव में बदलना संभव किया।

हमारे देश में साधु हैं जो संसार से अलगाव चाहते हैं। वे बहुत सी चीजों का त्याग करते हैं। और मानव बस्ती से दूर जंगलों में चले जाते हैं कि वहां मनन करें। इस तरीके से हम संसार के प्रेम से वास्तव में छुटकारा नहीं पा सकते हैं। उनमें पाप पर विजय पाने की क्षमता नहीं है और न पवित्रता का ज्ञान है। एक सुसज्जित घर की सभी सुविधाओं को त्याग कर, आप एक पेड़ के तले रह सकते हैं। लेकिन ये एक बड़ा बलिदान नहीं है। अपनी 'मैं' के लिए मरना और एक पवित्र जीवन जीना, एक नये स्तर के बलिदान को परिभाषित करता है। यहां आपको अद्भुत उपलब्धि प्राप्त होती है। यहां, मृतक का जी उठना, कोढ़ी का शुद्ध होना, तूफान को शांत करना आपके लिए कुछ भी नहीं है।

जो प्रभु ने आपको सौंपा है, जहाँ आप रहते हैं वहाँ उसे ईमानदारी से, लगन के साथ करें और पवित्र जीवन जीएं। परमेश्वर में आपको आत्मिक जीवन के उच्चतर स्तर में उठाने की ताकत है।

- एन. दानिएल।

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532- 2642872.
BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002
CHENNAI : LEF Head Quarter, 9-B, Nungambakkam High Road, Chennai, 600 034, 044-2827 2393
MUMBAI : Beautiful Books, Ground Floor, Lal Building, Goa Street, off SBS Marg,Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-2269 6599
GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733
SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

विश्राम के लिए... पृष्ठ 1 से

मगर हम सावधान हो जाएं। क्योंकि इन शब्दों को जिसने कहा है, वह प्रभु यीशु, वही एक मात्र जो छाया के समान बदलने वाले नहीं है। यीशु के बारे में बाइबल कहता है, 'उसने न तो कोई पाप किया और न उसके मुँह से छल की कोई बात निकली।' (1 पतरस 2:22) तो वह यही है; रक्षक, पाप रहित एक मात्र। निमंत्रण और प्रतिज्ञा के इन शब्दों को कहने वाला: 'हे सब थके और बोझ से दबे लोगो, मेरे पास आओ: मैं तुम्हें विश्राम दूँगा।' (मत्ती 11:28)

मेरे अपने व्यक्तिगत अनुभव में, मैं ने ऐसे, हजारों - हजार लोगों को देखा है और उनसे मिला हूँ; जिन्होंने प्रभु यीशु के इन शब्दों को परखा है और उन्हें सच पाया है। जब ऐसा लगने लगा है कि सब कुछ खो चुके हैं, जब उनकी छोटी सी दुनिया टुकड़ों में बिखर गई है, जब वे जानते थे कि उनके लिए कोई आशा नहीं बची है, तब वे यीशु के पास गये। और उन लोगों ने यीशु को सच पाया और यीशु ने उनको विश्राम दिया। ऐसे कई आदमी और औरतें, नौजवान और वृद्ध है जिन्होंने यीशु में शान्ति, विश्राम और क्षमा पाई है। इनके बीच में ऐसे लोग थे, जिनको चाहने वाले अपनों ने भी उन्हें असुधार्य और गुमराह जिन्हें पुन: पाना असाध्य समझ कर छोड़ दिया है। और ऐसे लोग भी थे जो खुदकुशी करने के कगार पर थे।

पाप और अपराध के भारी बोझ ने नीचे दबे पीड़ित लोग, मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम दूँगा। यह बुलावा सब लोगों के लिए है, जो उदास है, बार बार झटके लगने से हिल गये है, घबराहट से शक्तिहीन, शरीर और मन में कमजोर लोग और जो निराशा में है। 'मेरे पास आओ,' उद्धारकर्ता आपको बुला रहें है।

एक दफा एक कॉलेज में पढ़ रहे एक विद्यार्थी ने मुझे चिट्ठी में लिखा; 'हो सकने वाले हर एक पाप को मैं ने किया है, क्या मेरे लिए कोई आशा है?' वह विकृत यौन कृत्यों में लिप्त था, जिस से कि वह कमजोर और व्याकुल बन गया था। यह समझकर कि वह बहुत दूर भटक चुका है, वो निराशा में था। मैं ने जवाब में लिखा, 'हाँ, जब तुम पश्चाताप करोगे, तुम्हारे लिए आशा है।' प्रभु यीशु ने उस लड़के को छूआ। शान्ति और पापों की माफी उसे दी।

मैं अचम्भा करने लगा हूँ कि क्या कुछ लोग वास्तव ही गंभीर रूप से, हर तरह के स्थानों की पुण्य यात्रा के लिए निकल पड़ते हैं। कुछ लोग क्रिसमस मनाने बैतलेहेम जाते हैं। एक स्थान, चाहे जितना भी वह पवित्र हो, आपके आत्मा की गहरी जरूरत को वह पूरा नहीं कर पायेगा। वह 'एक व्यक्ति' है, जिसकी आपको जरूरत है - उद्धारकर्ता यीशु, जो 'मेरे पास आओ' कह कर आप को बुला रहे है।

लोगों को एक नुसख़ा चाहिए, एक वाक्य या जादुई दो शब्द जिससे की उनका काम चल जाये और आराम पहुँच जाये। या फिर वे एक तावीज़, कोई स्मारक अवशेष या तिलिसमात माँगते है कि वे उनको गले में या फिर बाहों में पहने, जिस से की उनको सुरक्षा का एहसास हो। अपना संकट में वे महंगे चढ़ावा देने के लिए तैयार हो जाते है, ताकि वे किसी मिथक व्यक्ति या कोई स्वघोषित ईश्वरीय-आदमी का अनुग्रह पा सकें। वे एक चर्च में जुड़ जाने के लिए तैयार हो जाते है जैसाकि वे किसी क्लब में शामिल होते हैं, इस आशा से कि उनकी समस्याओं का हल उनको मिल जाये।

नहीं, मेरे दोस्त, आपको एक व्यक्ति, के पास जाना होगा। वो आपसे प्रेम करने वाला, ' मेरे पास आओ कहकर आपको न्योता देने वाले उस उद्धारकर्ता के पास आपको जाना होगा। कुछ समय पहले एक नौजवान से मुझे चिट्ठी मिली। लिखा था कि उसने अपनी पत्नी को तलाक दे दिया और शादी करने कोई अच्छी लड़की मिल जाय, वह यह खोज रहा है। उसकी शादी बिलकुल टूट चुकी थी। लगता है उसकी पत्नी के जीवन में यीशु के लिए कोई स्थान है ही नहीं। लगातार तनाव के कारण, दोनों ने मानसिक रूप से हानि का अनुभव किया है। मैं ने उसको लिखा 'नहीं, तुम्हारी पत्नी को वापस लाने में परमेश्वर में समर्थ है। प्रभु यीशु नहीं चाहते है कि जब पत्नी जिन्दा हो, तो कोई भी आदमी किसी दूसरी औरत से शादी करे। ऐसा काम व्यभिचार माना जायेगा। अपनी पत्नी के वापस लौटने के लिए दरवाजा खुला रखो।' उसने मेरी बातों पर गौर किया। उसने अपने आप को शुद्ध करना और अपने पापों से छुटकारा पाने का प्रयास करने शुरु किया। अंधकार शक्तियों से छुटकारा पाने और तबाह अपनी गृहस्थी को पुनः निमार्ण करना शुरू किया। प्रभु ने हमारी प्रार्थना सुन ली। इस हफ्ते उस नौजवान से यह सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई कि उसने अपनी तलाक शुदा पत्नी से दुबारा शादी कर ली है और अब वे दोनों साथ-साथ जी रहे है! यह परिवार यूरोप के मध्य भाग में जी रहे है जहाँ विवाह का संबंध कमजोर हो गया है और शारीरिक वासनायें अत्यंत प्रबलता से राज कर रहे है। अब वे चाहते है कि मैं उनके क्षेत्र के कुछ कस्बों में जाकर प्रचार करूँ।

वह प्रभु यीशु ही हैं जिसने इस नौजवानों के घर को बसाया। यीशु को अपनी गृहस्थी का केन्द्र ना बनाकर वे मानसिक स्तर पर बरबाद हो चुके थे। प्रभु यीशु के शब्द, व्यर्थ शब्द नहीं है, 'मेरे पास आओ मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।' यह शब्द कितना सत्य है!

एक आदमी को आत्मा की गहराई में, कोई दूसरा आदमी विश्राम नहीं दे सकता। उसके माता-पिता भी नहीं, बल्कि सिर्फ यीशु मसीह। वो

गहरा, स्थिर विश्राम आपको देने का सामर्थ्य उन में है। आप के पापों को क्षमा करने का सामर्थ्य उन में है।

अनजाने में ही आप में दोषी होने का एहसास कायम है। क्षमा ना हुए पापों ने आपकी जिन्दगी में अपने अचेत मन में हलचल और हड़बडी मचाई हुई है। अचेत मन में दोष का एहसास बीमारी पैदा करता है। ऐसी बीमारियाँ आपको बेचैन कर देती हैं। डॉक्टर या कोई मनोवैज्ञानिक आपकी मदद नहीं कर पायेंगे।

'मेरे पास आओ मैं तुम्हें विश्राम दूँगा।' यह कोई चिकना, सुखदायक सूत्र नहीं, जो दूर से,धार्मिक तौर पर अत्यंत ताजगी देनेवाले शब्द साबित हो। आपको और मुझे इस विश्राम की जरूरत है। वास्तव में, इस मधुर विश्राम और शान्ति के बिना जीना ही व्यर्थ है। तब वह सिर्फ सूना, पीड़ा से भरा, उबाऊ अस्तित्व ही होगा।

'मैं तुम्हे विश्राम दूंगा।' यह एक वादा है, जो जरूर लगता होगा कि सच साबित होने के लिए इतना अच्छा है कि वह नामुमकिन हो। मगर मानो या ना मानो यह वास्तव में सच है। लाखों ने इस शान्ति और विश्राम को पाया है, जो यीशु आपको देते है। और आपको भी, मेरे प्रिय पाठक, आपको भी यीशु को चखना होगा।

- जोशुआ दानिएल।

परमेश्वर का गवाह

एक पापी के रुप में शुरुआत -

सन 1837, अमेरिका में, आमान्डा बेरी स्मिथ का जन्म गुलामी में हुआ था। मगर एक प्रार्थना के जवाब में उसकी मुक्ति का दाम चुकाया गया। सन 1856 में एक रात, जब वह कोलंबिया, पेंसिल्वनिया राज्य में जीवन गुजार रही थी, पास ही एक गिरिजाघर में आत्मिक जागृति की सभाएँ शुरू हुईं। जहां वह रह रही थी, वहां से वह गिरजाघर का गाना सुन पाती थी। मगर प्रार्थना करने वेदी के पास जाने का उसका मन नहीं था। प्रकाश और शान्ति की तलाश में वह दिन ब दिन और हफ्ता दर हफ्ता प्रार्थना और संघर्ष कर रही थी। हांलाकि परमेश्वर ने उसे दिखाया कि वह एक भयानक पापी है मगर वह अविरत अपनी इच्छा के विरुद्ध खड़ी होती।

आखिरकार एक रात, गाना इतना सुन्दर गाया जा रहा था कि उसने गिरजाघर के अन्दर जाने का खिंचाव महसूस किया। वेदी के पास आगे जाने की उसकी कोई इच्छा ना थी, इस इरादे से तो वह अन्दर नहीं आई थी। मगर सहसा उसने गिरजे के अंदर सामने वेदी की ओर गलीयार पर आधे रास्ते में अपने आप को चलते पाया।

वहां वेदी पर, अमान्डा, घुटनों पर गिरकर पूरी शक्ति से प्रार्थना करने लगीः 'हे प्रभु, मुझ पर दया कर! हे, प्रभु मुझ पर दया कर! हे, प्रभु मुझे बचा।' अंततः उस पर शांति छा गई। सभा का अंत होने पर अमान्डा घर चली आई। मगर उसको आगे क्या करना है, ये हिदायत करने वाला कोई ना था और वह अंधियारे में ही रह गई।

एक बार और प्रार्थना करना -

कुछ दिनों के बाद, जनवरी में, अमान्डा किसी दूसरे परिवार के यहां काम करने लगी। वह प्रकाश और शान्ति पाने के लिए लगातार प्रार्थना कर रही थी। 'ओह, मैं कैसे प्रार्थना करती थी, उपवास रखकर प्रार्थना किया करती थी', बाद में वह लिखती हैं, 'अपनी बाइबल पढ़कर मैं प्रार्थना करती थी, चाँद से विनती करती, सूरज को प्रार्थना करती और तारों से विनती करती।' मैं इतनी अज्ञान थी ... शैतान ने मुझसे कहा मैं बहुत बुरी पापी हूं और परमेश्वर मुझे नहीं बदलेगा।' शैतान ने उसे कहा कि वह ऐसी बुरी पापी है कि परमेश्वर उसकी प्रार्थना नहीं सुनेगा।

एक दफा जब अमान्डा प्रार्थना कर रही थी वह बहुत बेचैन हो गयी। एक कमीज जिसे खरीदने के लिए वो बहुत दिनों से पैसे बचा रही थी, उसके सामने आई। तब उसने प्रभु से कहा कि अगर वह उसके दिल से यह बोझ हटा दे, तो वह उन कमीजों में से एक भी नहीं खरीदेगी। एकाएक उसके दिल में शान्ति छा गई। मगर फिर भी उसकी आत्मा अंधियारे से भरी थी।

एक दिन, मार्च के महीने में, अमान्डा ने सोचा अब सब कुछ खत्म है। ऐसा लगा कि शैतान कह रहा है, 'मन फिराने के लिए तुम ने प्रार्थना की ना।' 'हां , की है!', अमांडा ने जवाब दिया।

'तुम इसमें ईमानदार रहीं हो।'

'हां।'

'तुमने इसे गंभीरता से लिया है।'

'हाँ।'

'तुमने अपनी बाइबल पढ़ी, उपवास किया, और सच में तुम मन फिराना चाहती थी।'

'हां, प्रभु, आप जानते हो; आप मेरे मन को जानते हो, मैं सच में मन फिराना चाहती हूँ।'

तब शैतान ने कहा, 'ठीक है, अगर परमेश्वर तुम को सचमुच बदला चहता तो वह बहुत पहले ही ऐसा कर दिया होता, वह अपना काम

सत्य की परख!

'देखो, अभी ग्रहण किए जाने का समय है। देखो, अभी वह उद्धार का दिन है।'

2 कुरिंथियों (6:2)

बहुत जल्दी करता है; मगर तेरी पूरी सच्ची निष्ठा के बावजूद परमेश्वर ने तुझे बदला नहीं है।'

'हाँ, ये सच है।'

'तो फिर तुम अपनी यह कोशिश छोड़ दो,' उसने कहा, 'कोई फायदा नहीं है, वह तेरी नहीं सुनेगा।'

'ठीक है, लगता है, मुझे ये प्रयास छोड़ देना चाहिए। मेरा विनाश निश्चित है और यह भी कि मैं अपने भाग्य को स्वीकार कर सकती हूँ।' उसी पल बड़ी साफ एक वाणी सुनाई दी और बोली, 'एक बार और प्रार्थना करो।' और उसी पल उसने कहा, 'मैं करूंगी।' फिर दूसरी आवाज ने कहा, 'तुम ऐसा करने का साहस मत करो।'

'हां, मैं वैसा करूंगी।'

अमान्डा ने निश्चिय किया: 'मैं फिर एक बार प्रार्थना करूंगी। और उद्धार नाम की कोई चीज है, तो मैंने ठान लिया कि इस दोपहर तक मैं उसे हाँसिल करुंगी, या मर जाऊंगी।'

अपनी विवशता में तहखाने में गयी। घुटनों के बल गिरकर जैसे कि वह पहले बहुत दफा ऐसा करती थी, उसने प्रार्थना की, 'हे प्रभु, मेरी आत्मा पर दया कर और किस तरह प्रार्थना करना है मैं नहीं जानती।' तब एक वाणी ने उससे कहा, 'इससे पहले भी तुम ने ठीक वहीं कहा था।' 'हे प्रभु, अगर मेरी आत्मा पर करुणा करने की कृपा करे तो मैं जीवन भर तेरी सेवा करुंगी।'

तब शैतान ने कहा, 'बेहतर होगा कि तुम अब बस करो, पहले भी तुम ऐसा कह चुकी हो।'

'हे प्रभु तू सिर्फ मेरे मन को बदल दो और सच्चे रूप से मुझे उसका आभास हो, क्यों की निश्चित रूप से मैं जानना चाहता हूं कि मैं परिवर्तित हो गयी हूं, मैं आजीवन तेरी सेवा करूंगी।'

'हां,' शैतान ने कहा, 'ये भी तुम ने पहले कहा है और परमेश्वर ने ऐसा नहीं किया है और अब बस भी करो।'

यह कैसा संघर्ष है! ऐसा लग रहा था मानो अमान्डा के चारों तरफ अंधकार छा रहा हो। और अपनी मायूसी में आंखे उठाकर उसने कहा, 'हे, प्रभु, मैं यहां नीचे मरने तक आयी हूँ, मुझे आज ही, इस दोपहर उद्धार चाहिए या फिर मौत। अगर आप मुझे नरक भेजना चाहते हो तो मैं वहां जाने कि लिए तैयार हूं मगर मेरे मन को बदल दो।' तब उसने ऊपर देखते कहा, 'हे प्रभु, अगर मेरी मदद करने की आपकी इच्छा हो, अगर मैं कभी पीछे हटूँ , तो फिर कभी आपके मुंह को शांति से निहारने का अवसर, मुझे कभी ना देना।' अमान्डा ने इन्तजार किया। वह पुराना सुझाव जो अब तक उसका पीछा कर रहा था अब सुनाई नहीं दिया- 'ठीक ऐसा ही तुम पहले भी कह चुकी हो,' तो अमान्डा ने वही प्रार्थना और दो बार दोहराई।

अमान्डा को तब एहसास होने लगा कि वह इन सारी बातों का अंत होने वाला है। अपनी निराशा में विवश आंखे उठाकर उसने कहा, 'हे, प्रभु, अगर आप मेरी मदद करें, तो मैं आप पर विश्वास करूंगी।' और परमेश्वर को ऐसा कहते-कहते वह वैसा ही विश्वास कर बैठी। शान्ति और आनंद उसकी आत्मा में भर गये! भारी बोझ अब दूर हो गया, बोझ हटने का एहसास उसने स्पष्ट महसूस किया। जो पहले कभी अनुभव ना किया था, ऐसा प्रकाश और खुशी आत्मा में एक बाढ़ की तरह बहा। उसकी प्रार्थनाओं का जवाब मिल गया। अब वह नई हो गई!

पवित्र-आत्मा की गवाही पाना:-

ज्यादा समय न बीता था कि एक सुबह, अमांडा जब एक पुराना भजन गा रही थी तो उसकी आत्मा भर गई। ठीक उसी समय शैतान उसको तंग करने लगा और दवा कर रहा था कि मन फिराने का उसके पास कोई सबूत नहीं है।

'सबूत, सबूत क्या होता है?' फिर अमांडा ने सोचा, क्या यह, वही गवाही तो नहीं जिसे बुजुर्ग आत्मा की गवाही कहते थे। 'ठीक है,' उसने कहा, 'वह गवाही पाने तक मैं ना तो गाऊंगी और ना प्रार्थना करूंगी।' उसने शुरू किया और उस बात पर अड़े रहने के लिए परमेश्वर ने उसकी सहायता की। उसने कहा, 'प्रभु मैं विश्वास करती हूं कि आपने मेरे मन को बदला है, मगर शैतान कहता है कि मेरे पास इस बात का कोई सबूत नहीं है। अब, प्रभु मुझे इस बात का सबूत दो।' और इस तरह उसने पूरे हफ्ते प्रार्थना की। समय-समय पर उसका दिल संतोष से भर जाता। बोझ पूरा हट गया। कोई दुख, उसके मन में ना था, वह पहले जैसा रो भी ना पाती थी, और वह समझ भी नहीं पा रही थी, तो वह विनती करती रही, 'प्रभु, मैं विश्वास करती हूं आपने मेरा मन बदला है, मगर आप मुझे उसका सबूत दो, इतना स्पष्ट और निश्चित कि इस बात को लेकर शैतान फिर कभी ना मुझे परेशान करे।' परमेश्वर ने उसकी प्रार्थना सुन ली।

'परमेश्वर के आत्मा की उसी गवाही ने,' उसने आगे कहा, ' जब मैं हर एक परीक्षा और प्रलोभन की आंधियों के बीच में गुजरी, उसी ने मुझे संभाला। तूफान के समय, ओह, यह कैसा लंगर रहा! हल्लेलूयाह, क्योंकि सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर राज्य कर रहा है। अगर अपनी खोज में सच्चाई से लगे रहोगे तो आप भी इस प्रभु को जान जाओगे। आमीन, आमीन।'

- अमांडा स्मिथ, एक आत्मकथा।

सुंदर की संरचना

एनी जॉनसन का जन्म, 1866 न्यूजर्सी, अमेरिका में हुआ था। बचपन में ही दोनों माता-पिता को उसने खो दिया था। उसके पिता का देहान्त होने से पहले फ्लिन्ट नामक एक मसीही परिवार ने उसे और उसकी बहन को गोद लिया था। आठ साल की आयु में, एक संजीवन सभाओं के दौरान, परमेश्वर के आत्मा ने उसके कोमल दिल पर इस तरह कार्य किया कि उसने मसीह पर विश्वास कर उद्धार पाया।

स्कूल की पढ़ाई खत्म करने के बाद एनी पढ़ाने लगी। मगर काम में लगने के दूसरे साल में ही उसे जल्द जोडों का रोग हो गया। फलतः उसे काम भी छोडना पड़ा। और बाद में तीन साल की बढ़ती बेबसी ने

उसका पीछा किया। कुछ महीने के अंतर में दोनों ने अपनाए माता-पिता का भी देहान्त हो गया। एनी और उसकी बहन फिर से अनाथ हो गए। उसके पास पैसे थोड़े ही थे। फिर उसे यह बताया गया कि वह आजीवन एक बेबस अपाहिज बनकर रहेगी - और फिर भी एनी ने उस 'एकांत-वास' से कविताएँ लिखीं, जिनके द्वारा हजारों को आशीषित किया।

एनी ने कहा था कि उन के कविताओं की प्रेरणा दूसरों की जरूरतों से जन्मी हैं ना कि अपनी जरूरत से। मगर जिन हालातों का उसने सामना किया है, उसने दूसरों की मदद करने और आराम दिलाते, लिखने के लिए सहायता की है। चालीस से भी अधिक साल पीड़ा सहते, जीवन के सफर में, थके हुए यात्रियों को उसने 'अपना मीठा गाना' सुनाया है। निम्न लिखित उसकी एक कविता है जो 'दा कोर्ट ऑफ दा किंग यानि राजा का दरबार' से उद्धरण है। अपनी जरूरत में 'एक बेकार लाठी' के सहारे और 'एक धुँए से काला पड़ गया धुंधला लालटेन' लिए, एक यात्री जो 'प्रार्थना करने तक अशिषित,' भारी बोझिल दिल जो गा ना सके, 'रास्ते में अनुभवित कठिन परिश्रम से मूर्च्छित स्थिति में 'राजा के दरबार में प्रवेश करता है:'

लंबे समय राज-दरबार में, मैं घुटने टेक जो रूका,
स्वच्छ उद्यान उनका, जिसे में मैं ने चला-फिरा;
जो कमी थी मुझ में या, सारा जो मैं ने खोया,
उनका कोषागार में, मैं ने वह सब है पाया;
दीया मेरा जो बुझ जाता, तेल फिर से भरा,
सिर पर मेरा एक ताज बना, जो उनकी है दया;
लाठी के बदले, जिसने किया था घायल हाथ मेरा,
उसके बजाय एक छड़ी रहम की,
उसने है दिया।

मुसाफिर इस तरह वापस निकल पड़ा - बड़ाई का ओढ़ना पहने, पैरों में मेल-मिलाप के जूते पहिने, शोक के बदले में हर्ष का तेल जो आत्मा को गा उठने में मजबूर करे; आनंद और बल से कमर कसकर; उसने लिखा, 'मैं राजा के दरबार से निकल पड़ा।'

उनके अत्यंत विख्यात रचनाओं, बाइबल के इन तीन प्रतिज्ञाओं पर आधारित है:

'वह और भी अधिक अनुग्रह देता है।' (याकूब 4:6)

'वह सामर्थ्य से भर देता है।' (यशायाह 40:29)

'तुम्हें दया, शान्ति और प्रेम बहुतायत से प्राप्त होता रहे।' (यहूदा 1:2)

और अधिक अनुग्रह देता, जब बोझ बढ़े विस्तार,
मेहनत बढ़ता तो भेजता, बल उसके अनुसार;
जुड़ती यातनाओं को सहना हो तो उनकी कृपा जुडता,
गुणा हुए परीक्षण, तो गुणा भी उनकी शक्ति का भंडार;
सहन-शक्ति का भंडार अपना, जो हुआ खाली,
ताकत भी लुप्त हुई, मगर दिन अब भी आधा बाकी,
पहुँचा अंत तक अपनी, संपदा का ढेर भी,
मगर परमपिता का पूर्ण देन, हुआ शुरू अभी।
उनके प्रेम की कोई सीमा नहीं,
उनके अनुग्रह का कोई माप नहीं,
उनके सामर्थ्य की सीमा जानता नहीं कोई आदमी;
क्यों कि अनंत धन संपत्ति, यीशु में है गुप्त।
वह देता है, फिर देता है, उसे आप पर करता है लुप्त।

एनी जॉनसन फ्लिंट एक गहरी और उच्च आत्मिक जीवन पर विश्वास करती थी। और इसी का उदाहरण, अपने जीवन में परमेश्वर के सत्य को परखते निरन्तर आगे बढ़ते जाना है - इस बात पर वह विश्वास करती थी। यही भाव 'आइए आगे बढ़ते रहें' कविता में साफ जाहिर है जो निम्न लिखित दोनों पदों में व्यक्त है। सन 1932 में वह चल बसी। वह परमेश्वर का एक पात्र रही जिस में से मसीह से बहता जीवन के जल की नदी उमड़ कर बहती थी।

मसीह जो क्रूस पर मरा, वहीं पर रूक गया होता,
तो रह जाता उसका सारा काम आधूरा;
मसीह जो दफन कब्र में, दफन ही रहता,
तो जान जाता सिर्फ होना शिकस्त, खाली ना रहता मकब्रा;
मज़ार का यह रास्ता, आगे बढ़ता बदलता,
बन स्वर्गीय स्थानों में अनुग्रह भरी विजय, जहां प्रभु पधारा।

तो आओ हम भी चले प्रभु के साथ हमारे,
परमेश्वर की परिपूर्णता में, हमारे लिए जो उसने खरीदा,
अच्छाई और समझ के बाहर-अपार, महिमा।
पहचान ना पाएंगे उच्च विचार भी हमारा;
स्वरूप में आगे बढ़ते, हम मसीह के,
उनका जीवन और सामर्थ्य का करते हम दावा,-
स्वर्गीय स्थानों में अनुग्रह ने जो जीता,
विजयी प्रभु ने जो बनाई, जीत हमारी।

- रोलैंड. वी. बिंगहम कृत 'द मेकिंग ऑफ द ब्युटिफुल' देखे।